विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन सन्तुष्टि पर आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एवं सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन

A Study of Effect of Spiritual Intelligence, Social Intelligence and Emotional Intelligence on Life Satisfacation of Senior Secondary Schools Girls of Different Socio Economic Status

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय

गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर

को

पी–एच.डी.(शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोधकर्त्रीः

कमलेश सैनी

शोध छात्रा

iase
Deemed
university

शोध निर्देशक :

डॉ. लोकेश शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा)

बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सीटीई

गाँधी विद्यामन्दिर,सरदारशहर, जिला–चूरू (राजस्थान) – 331401

2016

शोध – प्रारूप

1. शोधकर्त्री का नाम : कमलेश सैनी

2. अध्ययन का स्थान : बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
सीटीई, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

3. शोध शीर्षक : विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन सन्तुष्टि पर आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एवं सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन।

A Study of Effect of Spiritual Intelligence, Social Intelligence and Emotional Intelligence on Life Satisfacation of Senior Secondary Schools Girls of Different Socio Economic Status

4. प्रस्तावना :

समाज में महिला और पुरूष दोनों का महत्व है। मनुष्य जीवन में स्त्री व पुरूष दोनों गाड़ी के दो पहिये है। जिस प्रकार एक पहिये के बिना गाड़ी नहीं चल सकती है उसी प्रकार बिना पुरूष के महिला अधूरी है तो बिना महिला के पुरूष अधुरा है। महिला समाज की धूरी है। बिना महिला के परिवार व समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मुण्डकोपनिषद में लिखा गया है – ***यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवताः***। अर्थात जहां नारी की पूजा की जाती है वहां पर देवता निवास करते है। पूजा से तात्पर्य यहां सम्मान से है। जितना योगदान पुरूष का परिवार, समाज व देश की प्रगति में है उतना ही योगदान महिलाओं का भी है। महिलाओं को किसी भी तरह से कम नहीं आंकना चाहिए। हमारे धार्मिक ग्रन्थों में तो महिला को नारायणी तक कहा गया है। यथा ***नारी तू नारायणी।***

प्राचीन काल से ही समाज के विकास में महिलाओं का योगदान रहा है। प्राचीन काल में महिलायें शासन चलाया करती थी। यथा पूर्व मध्यकाल में हम देश के अनेक भागों में महिला शासक पाते है – दिद्दा, यशोवती व सुगन्धा ने कश्मीर में शासन की बागडोर संभाली। वर्तमान आंध्रप्रदेश के बैंगी शहर के इलाके में जो पूर्वी चालूक्य के अधीन था वहां पर अपने पति चन्द्र आदित्य की मृत्यु के बाद रानी विजया महादेवी ने शासन किया। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को कौन नहीं जानता जिसने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये थे। रानी

दुर्गावती, गार्गी, कात्यायनी, विजयलक्ष्मी पण्डित व इन्दिरा गांधी को तो सभी जानते ही है। इनका भारतीय विकास में अति महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

वर्तमान समय में भी महिलाओं का परिवार समाज और देश के विकास में अमूल्य योगदान है। आज महिला किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। महिलायें प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। अंतरिक्ष यात्रा करने वाली कल्पना चावला व सुनिता विलियम्स, माउण्ट एवरेस्ट की चढ़ाई करने वाली बिच्छेन्द्री पाल, खेल जगत में आरती शाह जो इग्लिश चैलन को तैरकर पार करने वाली प्रथम महिला है। टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्जा तथा मुक्केबाजी की मैरीकॉम आदि। प्रशासनिक क्षेत्र में किरण बेदी व फातिमा बीबी जो प्रथम महिला जज बनी। राजनीतिक क्षेत्र में वसुन्धरा राजे, प्रतिभा पाटिल, सोनिया गांधी जैसी महिलायें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। संगीत व साहित्य के क्षेत्र में लता मंगेशकर, आशा भोशले व महादेवी वर्मा को सभी जानते है।

महिलायें व्यापार, उद्योग, नौकरी, देश सेवा सभी क्षेत्रों में आगे है। नारी के वर्तमान स्वरूप को देखकर किसी ने भी यह नहीं सोचा होगा कि इस पुरूष प्रधान समाज में नारी सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक रूप से इतनी उन्नति कर जायेगी या पुरूषों से भी चार कदम आगे निकल जायेगी।

उपरोक्त सभी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए भी अत्यन्त दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि किसी कवि द्वारा कही गई यह पक्तियां महिलाओं पर आज भी लागू होती है – ***"हाय अबला तेरी यही कहानी, आँचल में दूध और आखों में पानी।"*** नारी द्वारा इतनी प्रगति करने के उपरान्त भी कामकाजी महिलायें और घरेलू महिलायें दोनों ही अपने जीवन से सन्तुष्ट नहीं है क्योंकि जीवन संतुष्टि को प्रभावित करने वाले विभिन्न प्रकार के कारक होते है। इन कारकों में महिलाओं का सामाजिक स्तर एवं आर्थिक स्तर उनके रहने का ढ़ंग, सामाजिक आर्थिक वातावरण, आंनुवाशिंकता आदि प्रमुख हो सकते है। इन सब कारकों का महिलाओं के जीवन संतुष्टि पर भी प्रभाव हो सकता है। कई बार महिलायें अपने–आप से ही सन्तुष्ट नहीं होती है। ऐसा उनके द्वारा किये गये कार्यों से प्रतीत होता है। वर्तमान समय में अनेक कामकाजी महिलायें व ग्रहणी महिलायें आत्म हत्याएं कर लेती है। रोज समाचार पत्र–पत्रिकाओं में अलगाववाद एवं महिलाओं में नैराश्य उत्पन्न करने वाली खबरों से अवगत होना पड़ता है। महिलायें आज भागम–भाग की जिन्दगी में अपने मूल अधिकार एवं कर्तव्यों से भटक सी गई है। इन अवस्थाओं को देखकर लगता है कि

महिलायें इतना आगे बढ़ने के बावजूद भी अशान्त व दुःखद जीवन जी रही है। इस प्रकार बालिकाओं, महिलाओं के जीवन को जो कि उथल–पुथल का जीवन माना जाता है में विभिन्न स्तरों यथा सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर पर उनकी आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि और सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव को जानना और समझना अति आवश्यक है।

इन गहन विचारों की अवस्था हमें उद्वेलित करती है कि आज उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक स्तर को लेकर उनकी जीवन संतुष्टि पर विभिन्न चरों जैसे आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एव सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना चाहिए।

5. अध्ययन का महत्व :–

प्रत्येक शोध अध्ययन का कोई न कोई महत्व अवश्य होता है। समस्या के महत्व को देखकर ही उसका चयन किया जाता है, जैसा कि इस अध्ययन के शीर्षक से ही स्पष्ट हो जाता है कि इस अध्ययन के अन्तर्गत सामाजिक–आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एवं सांवेगिक बुद्धि के प्रभावों को जानने का प्रयास किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध कार्य में सामाजिक–आर्थिक स्तर एक स्वतंत्र चर है जिसमें छात्राओं को उक्त आधार पर दो वर्गों में विभक्त कर यथा उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर, आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एवं सांवेगिक बुद्धि के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जायेगा। प्रस्तुत शोध कार्य में सामाजिक–आर्थिक स्तर से तात्पर्य छात्राओं की उक्त दिशा में स्थिति (Position) के स्तर से लिया गया है। अर्थात् सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में वैयक्तिक विशेष की वरीयता स्थिति (Position Rank) कैसी है? का द्योतक विवरण, जो या तो उच्च भाव में होगा या निम्न भाव में होगा, से लिया गया है। **ऑक्सफॉर्ड शब्दकोष** के अनुसार *"स्तर शब्द बहुतायत वैयक्तिक व सामूहिक स्वरूप में सामाजिक एवं आर्थिक स्तरों की स्थितियों को स्पष्ट अभिव्यक्त करता है।"*

इस प्रकार सामाजिक आर्थिक स्तर से तात्पर्य व्यक्ति या समूह विशेष की उन स्थितियों से है, जो उसके सामाजिक व आर्थिक पहलुओं तथा पृष्ठभूमियों के स्पष्ट दृष्टिकोण के प्रकटीकरण से सम्बन्धित है। स्तर शब्द अपने भाव स्वरूप में विभक्तिकरण का द्योतक है, जो या तो उच्च स्थितियों को दर्शाता है या निम्न स्थितियों को दर्शाता है। इस प्रकार व्यक्ति या समूह विशेष की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों से जुड़कर स्पष्टतः

उच्च व निम्न स्थितियों का द्योतक बन गया। सामाजिक–आर्थिक स्तर की विषय–वस्तु में जीवन–स्तर अर्थात् रहन–सहन, खान–पान, आय का स्वरूप अर्जित सामाजिक प्रतिष्ठा, शैक्षिक–पृष्ठभूमि, धारित सामाजिक पद, भौतिक संसाधन, अनुयायी व सम्मान करने वाले लोगों की संख्या, प्राप्त पुरस्कार, सामाजिक योगदान, आर्थिक–उपलब्धियों जैसे घटक शामिल होते हैं। उक्त घटकों के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति विशेष का अर्जन क्षेत्र अत्यधिक मात्रा में तथा उच्च भाव में है तो वह व्यक्ति व वर्ग विशेष उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति का धारक होगा इसके विपरित इन घटकों के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति या वर्ग विशेष का अर्जन क्षेत्र न्यून व कमजोर है तो वह व्यक्ति या वर्ग निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है।

सामाजिक–आर्थिक स्तर की विषय–वस्तु के घटक ही उसके मापक मानक हैं। इन्हीं घटकों के मापन की पृष्ठभूमि में कोई व्यक्ति या वर्ग स्पष्ट रूप से यह भाव प्रकट करेगा कि सामाजिक–आर्थिक स्तर के धारक घटकों के स्वरूपीय दृष्टिकोण से, वह किस सामाजिक–आर्थिक स्तर वर्ग विशेष में समाहित है। सामाजिक–आर्थिक स्तर के उपर्युक्त भावार्थ चिन्तन को अक्षरशः छात्राओं के सन्दर्भ में स्वीकार किया गया है। सामाजिक–आर्थिक स्तर के उपर दिए गए मापक घटकों के आधार पर मानकीकृत मापनी से उक्त दिशा की सार्थक सूचनाएं प्राप्त कर छात्राओं के उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के दो वर्ग बनाकर अनुसंधान को लक्ष्य परक दिशा दी जायेगी।

6. अध्ययन का औचित्य :–

शर्मा, एस. (1975) ने "विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तरों के विद्यालयी छात्राओं के आर्थिक स्तरों तथा व्यक्तित्व के गुणों एवं बुद्धि के बीच संबंध ज्ञात करने के लिए अध्ययन" किया, चटर्जी, पी. एस. (1983) ने ''विभिन्न समूहों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन'' किया, दास, विजय लक्ष्मी (1988) ने ''उड़ीसा के कटक जिले के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के जीवन सन्तुष्टि एवं व्यावसायिक अभिप्रेरणा का अध्ययन'' किया, जैन, मृदुला (1990) ने ''कार्यशील और गैर–कार्यशील माताओं के बच्चों पर समायोजन, नैराश्य तथा आकांक्षा–स्तर का दबाव'' विषय पर अध्ययन किया, वाई, सुनन्दा (1991) ने ''जीवन संतुष्टि और आत्म सम्बोध के मध्य नैराश्य की प्रतिक्रिया का अध्ययन'', किया, मीणा, रामस्वरूप (2012) ने ''बी.एड. विद्यार्थियों में आत्मनियन्त्रण एवं जीवन सन्तुष्टि का अध्ययन'' विषय पर शोधकार्य किया।

अभी तक पूर्ण किये गये विभिन्न शोध कार्यों के अध्ययनों का पुनरावलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि ऐसा कोई अध्ययन प्रकाश में नहीं आया है जो इस शीर्षक पर आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एवं सांवेगिक बुद्धि को एक साथ लेकर किया गया हो। शोधकर्त्री ने विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एवं सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन शीर्षक पर शोध करने का निश्चय किया है कि इस अध्ययन के द्वारा प्राप्त निष्कर्ष निश्चित रूप से शिक्षा जगत को अल्पमात्रा में योगदान अवश्य करेगा।

7. समस्या कथन

विभिन्न सामाजिक, आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन सन्तुष्टि पर आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एवं सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन।

A Study of Effect of Spiritual Intelligence, Social Intelligence and Emotional Intelligence on Life Satisfacation of Senior Secondary Schools Girls of Different Socio Economic Status

8. शब्दों का परिभाषीकरण :–

सामाजिक–आर्थिक स्तर –

प्रस्तुत शोध कार्य में सामाजिक–आर्थिक स्तर एक स्वतंत्र चर है जिसमें महिलाओं को उक्त आधार पर दो वर्गों में विभक्त कर यथा उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर, आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एवं सांवेगिक बुद्धि के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जायेगा। प्रस्तुत शोध कार्य में सामाजिक–आर्थिक स्तर से तात्पर्य महिलाओं की उक्त दिशा में स्थिति (Position) के स्तर से लिया गया है। अर्थात सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में वैयक्तिक विशेष की वरीयता स्थिति (Position Rank) कैसी है? का द्योतक विवरण, जो या तो उच्च भाव में होगा या निम्न भाव में होगा, से लिया गया है। आक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार ''स्तर शब्द बहुतायत वैयक्तिक व सामूहिक स्वरूप में सामाजिक एवं आर्थिक स्तरों की स्थितियों को स्पष्ट अभिव्यक्त करता है।''

जीवन सन्तुष्टि –

''गुड'' के अनुसार – ''जीवन संतुष्टि एक मानसिक तथा संवेगात्मक स्थिति है जिसमें कोई भी व्यक्ति परिस्थिति के अनुसार समाज के हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य करता है। यह शैक्षिक गहनता की परिस्थितियों को बताती है जो व्यक्ति की योग्यता को प्रदर्शित करती है तथा यह भी बतलाती है कि व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में अपने आपको दूसरो के साथ कैसे समायोजित कर लेता है।''

थार्नडाइक के अनुसार ''एक व्यक्ति की संतुष्टि की स्थिति वह होती है जिसमें वह उन अनुक्रियाओं को उपेक्षित नहीं करने का और उसको पुनः करने का प्रयास करता है। दूसरी तरफ असंतुष्ट की स्थिति का अभिप्रायः यह है कि जब व्यक्ति किसी अनुक्रिया को करने का पुनः प्रयास नहीं करता है और उसकों समाप्त कर देता है। इस प्रकार संतुष्ट क्रिया को करने से रोकती है। असंतुष्टि से तनाव, चिन्ता और कार्य करने की कुशलता कम होती है। संतुष्टि व्यक्ति को प्रसन्न एवं उसी व्यवहार और क्रिया औश्र बार–बार करने के लिए प्रेरित करती है।''

जीवन संतुष्टि स्वास्थ्य, आर्थिक, व्यक्तिगत, सामाजिक, वैवाहिक, पारिवारिक, व्यावसायिक संतुष्टि स्वास्थ्य, आर्थिक, व्यक्तिगत, सामाजिक, वैवाहिक, पारिवारिक, व्यावसायिक संतुष्टि के रूप में परिलक्षित होती है जबकि असंतुष्टि असमायोजन के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई देती है। जीवन संतुष्टि और सामाजिक आर्थिक स्थिति के बीच में सकारात्मक सम्बन्ध प्राप्त किया गया है। ऐसा पाया गया है कि स्वास्थ्य की स्थिति एवं जीवन सन्तुष्टि सकारात्मक रूप से सहसम्बन्धित है।

बुद्धि –

ऑक्सफोर्ड एडवांस लर्नर्स डिक्सनरी के अनुसार– ''बुद्धि, सीखने, समझने एवं चिन्तन करने की एक तार्किक वैयक्तिक योग्यता है।''

मनोवैज्ञानिक स्वरूप में बुद्धि एक अर्थ (Explanation) जिसे अंग्रेजी में Intelligence के नाम से पुकारा जाता है, चूंकि ''बुद्धि वैयक्तिक भिन्नताओं का एक अर्थ मात्र है अतः इसकी कोई भौतिक सत्ता नहीं होती, भौतिक सत्ता न होने के कारण उसके आयाम (Dimension) भी भौतिक नहीं होते वे तो केवल गुण मात्र है जो विशेष लक्षण, समस्या समाधान, चिन्तन आदि में एक–दूसरे से भिन्न बता देते है।''

प्रोफेसर रॉस ने बुद्धि के सन्दर्भ में कहा कि ''नवीन परिस्थितियों से चेतन अनुकूल ही बुद्धि है।''

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक बर्ट का मानना है कि ''बुद्धि अच्छी तरह से निर्णय करने, समझने एवं तर्क करने की योग्यता है''

बुद्धि के विभिन्न प्रकार मनोवैज्ञानिकों ने विभक्त किए है जिसमें मूर्त बुद्धि, अमूर्त बुद्धि, सामजिक बुद्धि, आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक आदि प्रमुख है।

9. संदर्भ साहित्य का अध्ययन :–

1. **क्राउस ऑर्थ (1996)** ने ''जीवन सन्तुष्टि एवं उपलब्धि में महिलाओं की अक्षमताओं की भूमिका'' विषय पर पीएच.डी. स्तरीय शोध कार्य सम्पन्न किया। इन्होंने 20 महिलाओं का चयन किया। जिसमें 10 से 60 वर्ष के उपर की थी। जिनका साक्षात्कार कर निष्कर्ष प्राप्त किये– कार्यरत महिलाओं में सामान्य महिलाओं जैसी अयोग्यताये यथा बच्चों के प्रति कम चाहत अपने प्रति आकाक्षायें, अभिभावकों के प्रति उपेक्षायें तथा असीमित उत्कृष्टताओं आदि वयस्क महिलाओं के समान होती है। कार्यरत महिलाओं में जीवन सन्तुष्टि स्तर उच्च पाया गया। उपलब्धि व्यवहार तथा अयोग्यताओं के प्रथक्करण के बीच कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया।
2. **आसबेल, जी. एस. (2001)** – ने ''इन्टेलीजेन्स इज क्रोरिलेटिड एक्रॉस डिफ्रेन्ट लेवल ऑफ एस. ई. एस.'' नामक एक शोध कार्य किया और निष्कर्ष निकाला तथा पाया कि गणितीय उपलब्धि का सामाजिक बुद्धि से सार्थक अन्तर है।
3. **शर्मा, एम.के. (2007)** – ने ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धि लब्धि एवं भारतीय संस्कृति के ज्ञान स्तर का अध्ययन'' किया और निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक बुद्धि माध्यमिक स्तर की छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक पायी गयी तथा भारतीय संस्कृति का ज्ञान छात्राओं में अधिक स्थाई पाया गया।
4. **सिंह, गौरव एवं कुमार, गिरीजेश (2008)**– ने ''संवेगात्मक बुद्धि और अनुदेशन माध्यम, माध्यमिक शिक्षकों पर एक अध्ययन'' विषय पर अध्ययन किया और

निष्कर्ष सुझाव देते है कि अनुदेशन के माध्यम का शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि पर प्रभाव पड़ता है।

5. **शर्मा, कुलदीप (2011)** – ने ''महाविद्यालयी अर्न्तमुखी एवं बहीर्मुखी विद्यार्थियों की सांवेगिक व सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर अध्ययन किया। इन्होंने शोध के निष्कर्ष में पाया कि अर्न्तमुखी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि की तुलना से बहिर्मुखी छात्रों की संवंगात्मक बुद्धि अधिक होती है। इसका कारण यह हो सकता है जिसके कारण उनकी संवेगात्मक बुद्धि का उचित विकास नहीं हो पाता है जब कि इसके विपरीत बहिर्मुखी छात्र व्यावहारिक होने के कारण अधिक संवेगात्मक बुद्धि रखते है।

10. अध्ययन के उद्देश्य :–

1. विभिन्न सामाजिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर आध्यात्मिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन।
2. विभिन्न सामाजिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर सामाजिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन।
3. विभिन्न सामाजिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन।
4. विभिन्न आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर आध्यात्मिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन।
5. विभिन्न आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर सामाजिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन।
6. विभिन्न आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन।
7. विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एवं सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन।

11. अध्ययन की परिकल्पनाएं :–

1. विभिन्न सामाजिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर आध्यात्मिक बुद्धि का कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है।
2. विभिन्न सामाजिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर सामाजिक बुद्धि का कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है।
3. विभिन्न सामाजिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर सांवेगिक बुद्धि का कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है।
4. विभिन्न आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर आध्यात्मिक बुद्धि का कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है।
5. विभिन्न आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर सामाजिक बुद्धि का कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है।
6. विभिन्न आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर सांवेगिक बुद्धि का कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है।
7. विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की जीवन संतुष्टि पर आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एवं सांवेगिक बुद्धि का कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है।

12. न्यादर्श :–

इस शोध कार्य में शोधकर्त्री के द्वारा अध्ययन को सफल बनाने हेतु शेखावाटी क्षेत्र के चुरू, झुन्झुनू एवं सीकर जिले की 1000 निजी एवं सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं को लिया जायेगा।

13. शोधविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जायेगा क्योंकि यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त प्रदत्त संकलन, प्रमाणिक एवं विश्वसनीय होते है तथा उनकी सत्यता अभिष्ट होती है।

14. शोध के उपकरण :–

क्र.सं.	उपकरण का नाम	निर्माणकर्ता का नाम
1	सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी	राजबीर सिंह, राधेश्याम एवं सतीश कुमार
2	जीवन संतुष्टि मापनी	डॉ. क्यू.जी. आलम एवं डॉ. रामजी श्रीवास्तव
3	आध्यात्मिक बुद्धि मापनी	डॉ. के.एस. मिश्रा
4	सामाजिक बुद्धि मापनी	डॉ. एन.के. चढ्ढ़ा एवं डॉ. उषा गणेशन
5	सांवेगिक बुद्धि मापनी	डॉ. ए.के. सिंह

15. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रस्तुत शोध कार्य में एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा।

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. क्रान्तिक अनुपात मान

16. प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का अध्याय क्रम :–

प्रथम अध्याय :– अध्ययन की पृष्ठभूमि।

द्वितीय अध्याय :– संबंधित साहित्य का अध्ययन।

तृतीय अध्याय :– शोध विधि एवं प्रक्रिया।

चतुर्थ अध्याय :– सारणीयन एवं दत्त विश्लेषण।

पंचम अध्याय :– निष्कर्ष एवं सुझाव तथा कार्ययोजना।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बोहरा, हरिवल्लभ, (1993), ''कवीन्द्र रवीन्द्र का शैक्षिक चिन्तन'' शिविरा पत्रिका, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा विभाग, बीकानेर, अंक 11–12, पृष्ठ संख्या 545,
2. पाण्डेय, रामदास, (2003), ''उच्च शिक्षा और निजी प्रबन्धन'' विद्या प्रकाशन, मेरठ, अंक 77, पृष्ठ संख्या 13–14,
3. सक्सेना, निर्मला, (1997), ''शिक्षक–प्रशिक्षण का पाठशाला शिक्षण में योगदान'', शिक्षा–भारती, जयपुर, अंक 2, पृष्ठ संख्या 17–18.
4. लोढ़ा, जितेन्द्र कुमार, (2002), ''शिक्षा आर्थिक विकास का एक सशक्त माध्यम,'' प्राइमरी शिक्षक, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, अंक–3, पृष्ठ संख्या 25.
5. सोनी, अभयशील, (2006), ''प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यक्त चिन्ताओं के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'', डी.पी.ई.पी. ब्लॉक सरदारशहर,, पृष्ठ संख्या 3,
6. लोढ़ा, जितेन्द्र कुमार, (2005), ''शैक्षिक प्रशासन एवं गुणात्मक शिक्षा की सफलता का मुख्य आधार शिक्षकों का वृत्तिक विकास'', नया शिक्षक, मा.शि.वि. राजस्थान, बीकानेर,, पृष्ठ संख्या 60
7. राय, पारसनाथ, (2005), ''अनुसंधान परिचय'' लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशक, आगरा, पृष्ठ संख्या 54–55.
8. शर्मा, ओ.पी.,(2005), ''शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृष्ठ संख्या 111.
9. व्हमैयर, शली, (2008), ''ऑक्सफोर्ड एडवांस लर्नर डिक्सनरी'' ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ संख्या 1391.
10. अग्रवाल, पी.एन., (1992), ''नालन्दा कॉन्शियस डिक्सनरी,'' आदीश बुक डिपो, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 887.

शोधकार्य में लगने वाला समय :–

प्रस्तुत शोधकार्य पूर्ण करने में अनुमानित दो वर्ष का समय लगेगा, जिसका विवरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा रहा है :–

क्र.सं.	शोधकर्ता द्वारा किये जाने वाले शोधकार्य	अनुमानित समय
1	प्रथम अध्याय	4 माह
2	द्वितीय अध्याय	4 माह
3	तृतीय अध्याय	4 माह

4	चतुर्थ अध्याय	4 माह
5	पंचम अध्याय	4 माह
6	टंकण एवं बाईडिंग	4 माह
	कुल अवधि	**24 माह**

शोध कार्य के लिए उपलब्ध सुविधाएं

महाविद्यालय की मनोविज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय आदि।

डॉ. लोकेश शर्मा
शोध निर्देशक

कमलेश सैनी
शोध छात्रा